अक्टूबर 2019:
एक विशिष्ट मिशनरी महीना

विश्व मिशन रविवार, अक्टूबर 22, 2017 के दिन एंजेलुस प्रार्थना के अवसर पर संत पिता फ्रांसिस ने जनघोषणा के समय यह इच्छा प्रकट की थी कि, वे चाहते हैं कि अक्टूबर 2019 को एक विशिष्ट मिशनरी महीने के रूप में निर्धारित किया जाना चाहिए, जिससे संत पिता बेनेडिक्ट पंद्रहवें के प्रेरितिक पत्र '**मैक्सीमम इलुद**' की सौवीं वर्षगांठ मनायी जा सके। इसी दिन संत पिता ने कांग्रिगेशन फॉर द इवेंजेलाइज़ेशन ऑफ पीपुल्स (सी ई पी) के प्रीफेक्ट और पाण्टिफिकल मिशन सोसाइटीज़ की प्रधान परिषद के अध्यक्ष कार्डीनल फर्नान्दो फिलोनी को एक पत्र भेजा था। उन्होंने उन्हें जिम्मेदारी दी थी, कि वे विभिन्न कलीसियाओं, समर्पित/धर्मसंघी जीवन की संस्थाओं और प्रेरितिक जीवन की समितियों, विशेषकर सभी संस्थानों, धर्मसंघों, समितियों और अन्य कलीसियाई संस्थाओं में वे इसके प्रति जागरुकता उत्पन्न कर इस समारोह के आयोजन की तैयारी शुरु करें।

कलीसिया के मिशन के सम्बन्ध में ईश्वरीय प्रजा, की बपतिस्मा प्रतिज्ञाओं के नवीनीकरण हेतु संत पिता फ्रांसिस ने विशिष्ट मिशनरी महीनों के लिए निम्न विषय दिया है: "**(बपतिस्मा प्राप्त) ख्रीस्त की कलीसिया संसार में भेजी गई है।**" वास्तव में "**मिसिओ एद जेन्तेस**" के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने और एक नवीन उत्साह के साथ सुसमाचार की घोषणा करने की जिम्मेदारी दोनों ऐसे विषय हैं, जो संत पिता बेनेडिक्ट पंद्रहवें के "**मैक्सीमम इलुद**" के द्वारा उनके मन के विचारों को हमारे सम्मुख प्रकट करते हैं। यही विचार संत पिता फ्रांसिस ने "**एवेन्जली गौदियुम**" में प्रतिपादित किए हैं- "मिशनरी पहुँच (प्रचार-प्रसार) सभी कलीसियाओं की निर्देशनात्मक गतिविधियाँ हैं।" (ई.जी. 15)

इसका सम्बन्ध प्रभु येसु के मिशन को केन्द्र में रखकर, उसकी संरचना की प्रभावशीलता की जांच को कसौटी मानकर, उसके श्रम के परिणाम, उसके पुरोहितों (सेवकों) की सेवा का उपजाऊपन और उससे मिलने वाले आनन्द से है, क्योंकि आनन्द के अभाव में हम किसी को भी आकृषित नहीं कर सकते। (सी इ एल ए एम की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के साथ सभा, बोगोटा, 7 सितम्बर 2017)

क्रूसित, पुनर्जीवित एवं कलीसिया में जीवित येसु ख्रीस्त के प्रति व्यक्तिगत एवं सामुदायिक समर्पण परिवर्तन की भावना से कलीसिया/विश्वासियों में सुसमाचार घोषणा व ख्रीस्तीय जीवन संसार के सामने जीवन के सुममाचार एंव पास्का के आनन्द की साक्षी देने (लूकस 24: 46-49) के लिए जोश और उमंग नित्य नवीन होते जाएंगे।

इसके चार आयाम हैं: संत पिता ने विशिष्ट मिशनरी महीना 2019 की तैयारी और उसके कार्यान्वयन (पालन) हेतु चार आयाम हमारे सामने रखे हैं:

1. प्रभु येसु ख्रीस्त के साथ उसकी कलीसिया, पवित्र यूखरिस्त, ईश-वचन और व्यक्तिगत व सामुदायिक प्रार्थना में व्यक्तिगत भेंट (साक्षात्कार) करना।

2. साक्षी: जिसमें विश्वभर में व्याप्त कलीसिया के मिशनरी संतों, शहीदों, पापमोचकों, गुरुओं की जीवन साक्षियाँ।

3. मिशनरी प्रशिक्षण: धर्मशास्त्रीय, धर्मशिक्षा-सम्बन्धी, आध्यात्मिक एवं ईश शास्त्रीय प्रशिक्षण।

4. मिशनरीज़ चैरिटी (सेवाभाव)।

प्रोपोगान्दा फिदे और
पाण्टीफिकल मिशन समितियाँ

परमप्रधान पीठ की मिशनरी डिकास्ट्री, जिसे हम प्रोपोगान्दा फिदे अर्थात विश्वास का धर्म प्रचार-प्रसार विभाग के नाम से जानते हैं, की स्थापना वर्ष 1622 में तत्कालीन संत पिता ग्रेगोरी पंद्रहवें ने की थी। इसका मुख्य उद्देश्य प्रेरिताई के कामों और मिशनरी सहयोग को आगे बढ़ाना, उनमें सहयोग करना और उन्हें निर्देशित करना था। वर्ष 1967 में संत पिता पौलुस छठवें ने इसके प्रेरितिक सेवाकार्य और मान्यता को पुन: स्वीकारते हुए इसका नाम बदलकर कांग्रिगेशन फॉर द इवेंजेलाइज़ेशन ऑफ पीपुल्स (सी ई पी) कर दिया। सक्रिय सेवा भावना द्वारा प्रकट ख्रीस्तीय विश्वास का ठोस प्रभाव सार्वभौमिक चरवाहे संत पिता के मिशन की सहायता व सेवा करने के लिए बपतिस्मा प्राप्त सभी विश्वासियों को बाध्य (प्रेरित) करता है। प्रार्थना, आत्मत्याग, मिशनरी बुलाहट और आर्थिक सहायता पाण्टीफिकल मिशन समितियों (पी.एम.एस.) के पुराने साधन हैं। इन समितियों की स्थापना 19वीं और 20वीं शताब्दियों में मिशन के प्रति लोकधर्मियों और पुरोहितवर्ग के गहन लगाव व प्रेम के कारण हुई थी। सी ई पी और पीएमएस दोनों मिलकर मिशन की आवश्यकता व प्रशिक्षण के अनुसार आर्थिक मदद एकत्र करने और बाँटने के अपने प्रयासों को जीवन्त रखे हैं, ताकि मिशनरी संपूर्णता, जागरुकता एवं जिम्मेदारी की भावना एक बार पुन: ईश्वर के पवित्र एवं विश्वासी लोगों के सामान्य जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाएं (1 जून 2018 को पाण्टीफिकल मिशन समितियों के राष्ट्रीय निर्देशकों के नाम संत पिता फ्रांसिस का सम्बोधन)। चार समितियों-प्रोपोगेशन ऑफ फेथ (पी एस पी एफ), संत पेत्रुस, प्रेरित (पी.एस.एस.पी.ए.), मिशनरी बालकपन (एम.सी.ए.) एवं मिशनरी संघ का एक सामूहिक

उद्देश्य है- ईश्वरीय लोगों में एक सार्वभौमिक मिशनरी भावना विकसित करना। **(रेदेम्पतोरिस मिसिओ 84)**

पी. एस. पी. एफ. की स्थापना पूज्यनीय पॉलिन मारी जेरिकॉट ने 1822 में फ्रांस देश में की थी। यह आज भी विश्वासियों में प्रार्थना और आत्म त्याग की भावना जागृत करती है, उन्हें मिशन के कार्यों के लिए आर्थिक सहायता देने के लिए प्रेरित करती है और प्रार्थना करती है, कि प्रभु ऐसे स्त्री और पुरुषों को अपनी सेवा करने के लिए आह्वान दे, जो **मिसिओ एद जेन्तेस** की भावनानुसार अपने जीवन को प्रभु सेवा में समर्पित करने को तत्पर हों।

एम. सी. ए. की अधिकारिक रूप से स्थापना नैन्सी (फ्रांस) के धर्माध्यक्ष अतिश्रद्धेय चार्ल्स अगस्ते दे फॉर्बिन-जेनसन ने 1843 में पेरिस में की थी। इसका लक्ष्य है: "**बच्चे ही अन्य बच्चों की सहायता करें।**" इसी लक्ष्य के अनुसार यह संस्था विश्वभर में बच्चों को प्रेरित करती है, कि वे अपने साथियों की उनके साथ विश्वास बाँटने, प्रार्थना करने और आदान प्रदान के माध्यम से मदद करते रहें।

पी.एस.एस.पी.ए. की स्थापना काऐन (फ्रांस) में जीन और स्टीफानी बिगार्द ने वर्ष 1889 में की थी। यह संस्था भावी पुरोहितों (सेमीनेरी छात्रों), धर्मसंघी जीवन के उम्मीदवारों और मिशनरी क्षेत्रों में नई कलीसियाओं के प्रशिक्षण दाताओं की सहायता और सहयोग करती है।

पी.एम.यू. की स्थापना की प्रेरणा विदेशी मिशनों के लिए पाण्टीफिकल संस्था के मिशनरी पुरोहित धन्य पाओलो मन्ना को मिली थी। 1916 में इसे संत पिता बेनेडिक्ट पंद्रहवें ने मंजूरी दे दी थी। अन्य तीन मिशन समितियों का केन्द्र बिन्दु/आधार मानते हुए इसका मुख्य उद्देश्य कलीसिया में मिशन के लिए जोश (जागृति) उत्पन्न करना, मिशनरियों के प्रशिक्षण के लिए आर्थिक सहयोग करना और ख्रीस्तीय समुदायों में मिशनरी सहयोग उत्तेजित (पैदा) करना है। साथ ही इस संस्था का एक उद्देश्य है, मिशन कार्यों के लिए प्रार्थना करें और प्रचार-प्रसार के कार्यों में अपनी ठोस भूमिका निभाएं।

वर्ष 2022: कलीसिया के मिशन की वर्षगाँठ

वर्ष 2022 में कई वर्षगाँठें मनाई जाएँगी। कांग्रिगेशन फॉर द एवेंजेलाइज़ेशन ऑफ पीपुल्स की 400वीं वर्षगाँठ। मिशनरी सोसाइटी फॉर द प्रोपोगेशन ऑफ द फेथ की स्थापना के 200 वर्ष। पी. एस. पी. एफ, एम. सी. ए. और पी. एस. एस. पी. ए. जैसी तीन संस्थाओं की 100वीं वर्षगाँठ, जब इन्हें धर्माध्यक्षीय और यूनिवर्सल (सार्वभौमिक) का नाम और औहदा मिला। ये वर्षगाँठें समस्त कलीसिया की मिशनरी बपतिस्मा की जागरुकता को जीवित एवं प्रभावशाली बनाए रखने में देवप्रदत्त एवं समयोचित हो सकती हैं। यदि मिशन कार्यों में किसी प्रकार की संकटावस्था है, तो यह संकटावस्था विश्वास की है, जो कलीसिया के विश्वास की परिपक्वता साहसपूर्वक उसके मिशन कार्यों में प्रकट होती है, जो हर व्यक्ति व हर वस्तु को ख्रीस्त की ओर आकर्षित करती है। आने वाला विशिष्ट मिशनरी महीना, वास्तव में विश्वास, प्रार्थना, मनन-चिन्तन और सेवाभाव की दृष्टि से स्वयं में एक अपूर्व अनुभव होगा। यह अक्टूबर 2019 में ही समाप्त नहीं हो जायेगा, किन्तु इसका समापन कलीसिया के संपूर्ण जीवन और मिशनरी स्वभाव के लिए **मिसिओ एद जेन्तेस** की मनोभावना के अनुरूप प्रेरक एवं प्रतिमान के रूप में उत्साही एवं नवीन समर्पण के अनुकूल होगा।

For more information contact us at:
PONTIFICAL MISSION ORGANIZATIONS (INDIA)
No. 10, 3rd Cross, Ulsoor Road, Bangalore - 560042, Karnataka, INDIA.
Tel: +91 80 2558 5946
Email: pmorgbindia@gmail.com, Website: www.pmoinindia.org

Congregation for the Evangelization of Peoples
Pontifical Mission Societies

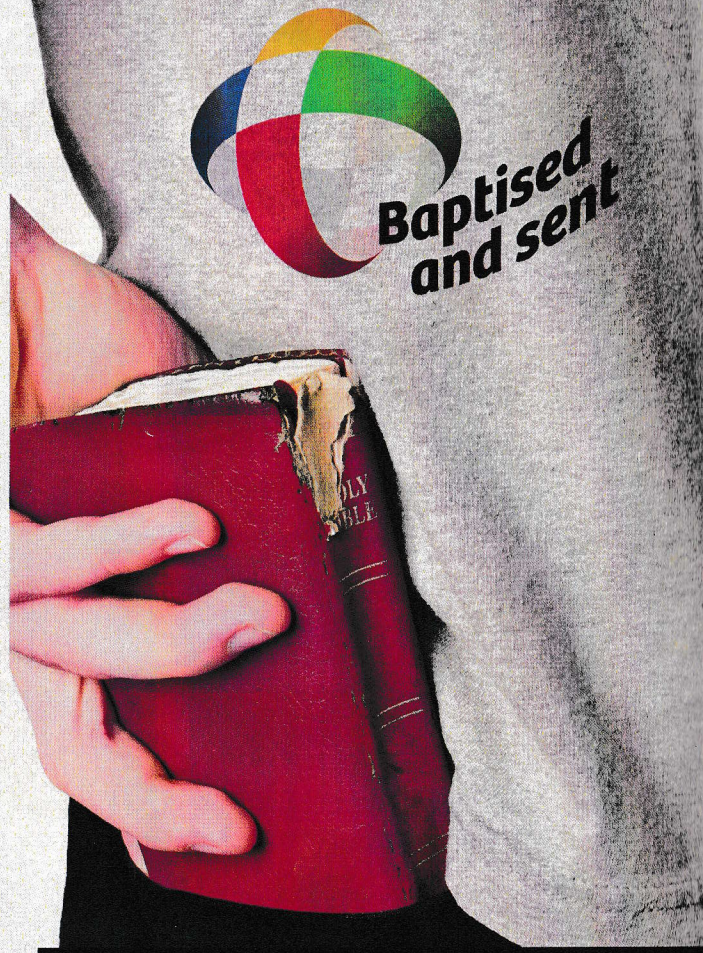

THE CHURCH OF CHRIST ON MISSION IN THE WORLD

EXTRAORDINARY MISSIONARY MONTH
October 2019